BA I H
11-4-20

PREMCHAND
YUGIN UPNAYASHKAR

हिंदी विभाग
GPR L3

साहित्य में मनोविज्ञान की पुकार है। कहा जाता है कि प्रेमचंद की रचनाओं में मनोवैज्ञानिक गहराई नहीं है। फलत: बाद के लेखक उपन्यासकार से अधिक मनोवैज्ञानिक बन उठे।

प्रेमचंद तटस्थ लेखक तो नहीं है परन्तु आदर्श की ओर बढ़ते हुए और वे अपनी कथा और अपने पात्रों को स्वयं बोलने देते हैं। बाद के कथाकार आलोचना की प्रवृत्ति लेकर चलते है और एक तरह से सटीक कथायें लिखते है।

प्रेमचंद का आदर्शवाद उद्देश्यपूर्ण था और आज के उपन्यास साहित्य भी उद्देश्यपूर्ण है परन्तु दोनों की शैली में अन्तर है। प्रेमचंद और यशपाल की शैली में अन्तर है। वास्तव में शैली-शिल्प की दृष्टि से प्रेमचन्दोत्तर-साहित्य एकदम प्रयोगवादी है।

कुछ रचनाओं में स्थानीय अथवा संवेदनात्मक यथार्थ चित्रण के रूप में एक नया प्रतिमान सामने आता है जैसे निराला के 'बिल्लेसुर बकरिहा' और नागार्जुन के बलचनमा में। वास्तव में ये रचनायें यथार्थवादी धारा की परिणति ही है।

यथार्थवादी धारा का प्रभाव ऐतिहासिक उपन्यासों पर भी पड़ा है और उनमें उसे तत्कालीन परिस्थितियों और विवरणों के सूक्ष्म आकलन की ओर आग्रह मिलता है। यशपाल का दिव्या और राहुल के उपन्यास इस प्रवृत्ति के साक्षी है।